UGC Approved Refereed Journal
Jr.No.43053
ISSN 2394-5303

Printing Area

International Multilingual Research Journal

Issue-32, Vol-04, August 2017

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

www.vidyawarta.com

Scanned with CamScanner

http://www.vidyawartajournal.blogspot.com | https://sites.google.com/site/vidyawartajournal

27) वस्तु व सेवा कर - जी.एस.टी. - एक दृष्टिक्षेप
डॉ. दिपक भुसारे-सुजाता पाटील || 109

28) राजश्री छत्रपती शाहू महाराज यांचे सामाजिक कार्य
प्रा. डॉ. बी. आर. मस्के, अमरावती. || 113

29) रेव्ह. आर. जी. बापल्डर यांचे कोल्हापूर संस्थानातील शिक्षणविषयक कार्य
प्रा. संदीप नलवाडे- डॉ. ए. के. मंजुळकर || 115

30) निर्मला पुतुल की कविताओं में चित्रित आदिवासी जीवन
संतोष नागरे, गेवराई जि.बीड || 119

31) राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्य में शोषितों के संदर्भ
डॉ. शशिकांत सोनवणे 'सावन', जलगाँव || 122

32) भारतीय कृषको द्वारा की गयी आत्म हत्या का एक समाजशास्त्रीय मूल्यांकन
डॉ० अजय कुमार, अरवल सुलतानपुर || 127

33) भारतीय साहित्य:झाँसी की रानी उपन्यास में चित्रित दलित स्त्री
डॉ० धर्मेन्द्र कुमार, मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०) || 131

34) किशोरावस्था के समग्र विकास में अनुकुल व सुरक्षित परिवेश का महत्व
डॉ. कुसुम विजयकुमार चौधरी, चेंबूर, मुंबई || 134

35) केशलेस (रोक रहित) व्यवहार की जटिल अवधारणा
अवि सोमानी—डॉ. गुरभेज सिंग चुनेजा, नेपानगर (बुरहानपुर) || 136

36) हिंदी फिल्में और भाषा शिक्षा
डॉ. जिजाबराव विश्वासराव पाटील, पाचोरा जि. जलगाँव (महाराष्ट्र) || 139

37) औपनिवेशिक भारत में शिक्षा नीति
राम कुमार, जुलाना, जिंद || 143

38) सेल्फी शौक:टशन या टेंशन
डॉ. नितीन कुंभार, किल्ले—धारुर जि.बीड || 148

Scanned with CamScanner

30

निर्मला पुतुल की कविताओं में चित्रित आदिवासी जीवन

(विशेष संदर्भ - 'नगाड़े की तरह बजते शब्द')

संतोष नागरे
सहा.प्राध्यापक - हिन्दी विभाग
र. भ. अट्टल महाविदयालय,
गेवराई जि.बीड

निर्मला पुतुल हिन्दी की शीर्षस्थ कवयित्री हैं। निर्मला पुतुल की कविताओं का केंद्र बिन्दु आदिवासी जीवन रहा है। आजादी के साठ साल बाद भी आदिवासी प्राथमिक जरुरतों से कोसों दूर है। इसलिए आजादी उनके लिए मजाक बनकर रह गयी है। आदिवासियों के सामाजिक पिछड़ेपन के मूल कारण जैसे- अशिक्षा, अंधविश्वास, शराब, कुपोषण, सरकारी नीतियाँ, भ्रष्टाचार, पर्यावरण ह्रास, सूदखोरों एवं डॉक्टरों द्वारा लूट, बाजारीकरण आदि पर निर्मला पुतुल ने प्रकाश डाला है। सरकार आदिवासियों को उनकी जमीन और जंगल से निष्कासित करने पर तुली हुई है। परिणामतः उनका अस्तित्व ही खतरे में आ गया है। निर्मला पुतुल की कलम आदिवासियों के हर शोषण के विरुध्द आग उगलती है। इसलिए निर्मला पुतुल की कविताएँ आदिवासियों के सामाजिक- सांस्कृतिक श्वेत-पत्र भी है। अरुण कमल इस संदर्भ में ठीक ही कहते हैं,- "ये कविताएँ स्वाधीनता के बाद हमारे राष्ट्रीय विकास के चरित्र पर प्रश्न करती है। सभ्यता के विकास और प्रगति की अवधारणा को चुनौती देती ये कविताएँ एक अर्थ में सामाजिक- सांस्कृतिक श्वेत-पत्र भी है।"(1)

आदिवासी इस देश के मूल निवासी है। दुर्भाग्य से स्वतंत्रता के साठ साल बाद भी ये रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और आरोग्य जैसी प्राथमिक जरुरतों से कोसों दूर है। शिक्षा समाज परिवर्तन का सशक्त माध्यम है। ज्ञान की किरण आदिवासी क्षेत्र में अभी तक पहुँच ही नहीं पायी। आदिवासी क्षेत्र में कोई भी अध्यापक टिकता नहीं; परिणामतः आदिवासियों का जीवन घोर अंधकारमय बन गया है। निर्मला पुतुल आदिवासियों की शैक्षिक दुर्दशा पर प्रकाश डालती हुई कहती है,-

"स्कूल मास्टर भी बदली कराकर चला गया
तब से बन्द ही पड़ा है स्कूल।"(2)

मास्टर जी के तबादले से सिर्फ स्कूल ही बन्द नहीं पड़ा है,तो आदिवासियों का जीवन-विकास भी रुक गया है। भूत-प्रेत, जादू-टोना, डायन आदि कई अंधविश्वास अज्ञान के कारण आदिवासी समाज में व्याप्त है। इन अंधविश्वासों को गाँव की जात-पंचायत का भी संरक्षण प्राप्त है। अंधविश्वासों के कारण नारकीय यातनाएँ भोगती स्त्रियों की पीड़ाओं को वाणी देती हुई निर्मला पुतुल कहती हैं,-

"और एक दिन तो गज़ब ही हो गया /
लखना के बेटे को साँप ने काटा
तो सबके सब आ धमके हम पर /
कहने लगे डायन हैं हम
कुछ कर दिया है उसके बच्चे को
वह तो अच्छा हुआ शरबतिया ने साँप देख लिया
नहीं तो पकलू बुढ़िया की तरह
मुझे भी घसीटकर ले जाते लोग कुलि में
और भरी पंचायत में सर मुँड़वा/नचा देते नंगा
कर देते मुँह पर पेशाब/ढूँस देते मैला।"(3)

अज्ञान, अंधविश्वास एवं शराब की आदत के कारण आदिवासी अमानवीय जीवन जीने के लिए विवश है। शराब ने आदिवासियों के जीवन को तहस-नहस कर डाला है। शराब की लत से आदिवासी बस्तियों को बचाने

Scanned with CamScanner

पर बल देती हुई निर्मला पुतुल कहती हैं,-

"तुम्हारे पिता ने कितनी शराब पी
यह तो मैं नहीं जानती
पर शराब उसे पी गयी यह जानता है सारा गाँव
इससे बचो चुड़का सोरेन।
बचाओ इसमें डूबने से अपनी बस्तियों को।"(4)

औदयोगिकरण, मशिनिकरण ने आदिवासियों की उपजीविका के साधन छिन लिए है। आदिवासी पुरुषों के साथ ही स्त्रियाँ भी पत्तल, झाड़ू, पंखा, दातुन, लकड़ियाँ तोड़ना, गाय-बकरियों को चराना, चट्टाइया बनाने का काम करती है। आदिवासियों द्वारा बनायी गई इन चीजों से उन्हें दो जून की रोटी तक नसीब नहीं होती। परिणामतः कुपोषण की समस्या विकराल रुप धारण कर रही है। बाजारीकरण ने आदिवासियों की रोटी छिन ली है। बाजारवाद पर प्रहार करती निर्मला पुतुल कहती हैं,-

"इधर काम-काज भी नहीं मिलता आजकल
जो मेहनत मजूरी कर घर चलाऊँ
दोना-पत्तल भी नहीं बिकता/
और न ही लेता है कोई चर-चटाई
झाड़ू, पंखा, दातुन का भी बाजार नहीं रहा अब।"(5)

बाजारीकरण ने आदिवासियों की उपजीविका के साधनों के साथ ही उनकी जमीन और जंगल भी छिन लिया है। आदिवासियों का प्रकृति के प्रति रागात्मक रिश्ता है। वे प्रकृति में भगवान को देखते हैं। उपभोक्तावादी दौर में पर्यावरण-प्रदूषण तीव्र गति से बढ़ रहा है। परिणामतः प्रकृति विकृति में बदलती जा रही है। कवयित्री निर्मला पुतुल प्रदूषित होती नदियों, पहाड़ों के विनाश, खून की उल्टियाँ करती हवाओं से चिंतित है। रोज कुल्हाड़ियों के आघात से धाराशायी हो रहे पेड़ों से आदिवासी बस्तियाँ नंगी होती जा रही है। संथाल परगना का जंगल कंक्रीट के जंगल में परिवर्तित होता जा रहा है। प्रकृति के प्रति लोगों की बढ़ती असंवेदनशीलता के माध्यम से निर्मला पुतुल मनुष्य की आदमियत पर प्रश्न चिह्न उपस्थित करती है। बाजारवाद ने आदिवासियों की संस्कृति को तहस-नहस कर डाला है। बाजारीकरण के इस दौर में आदिवासियों की पहचान समाप्त होती जा रही है। 'संथाल परगना' की दुर्दशा को वाणी देती हुई निर्मला पुतुल कहती हैं,-

"सन्थाल परगना/ अब नहीं रह गया सन्थाल परगना
बहुत कम बचे रह गये हैं
अपनी भाषा और वेशभूषा में यहाँ के लोग/
बाजार की तरफ भागते
सब कुछ गड्डमड्ड हो गया है इन दिनों यहाँ
उखड़ गये हैं बड़े-बड़े पुराने पेड़/
और कंक्रीट के पसरते जंगल में
खो गयी है इसकी पहचान।"(6)

सभ्य एवं सुसंस्कृत वर्ग इस देश के मूल निवासी आदिवासियों की उपेक्षा एवं अपमान निरंतर करता आ रहा है। पढ़े-लिखे, शहरी सभ्य लोग आदिवासियों की वेश-भूषा, भाषा, रहन-सहन, खान-पान, चाल-चलन, रीति-रिवाज, पहनावा-ओढावा, उनके कालेपन, उनकी संस्कृति का मजाक उड़ाते हैं। 'मेरा सब कुछ अप्रिय है उनकी नजर में' कविता में सभ्य जनों के इस दोगलेपन की पोल खोलती हुई निर्मला पुतुल कहती हैं,-

"वे घृणा करते हैं हमसे / हमारे कालेपन से
x x x
जंगली, असभ्य, पिछड़ा कह /
हिकारत से देखते हैं हमें
और अपने को सभ्य श्रेष्ठ समझ /
नकारते हैं हमारी चीजों को।"(7)

हमारे देश में गल्ली से लेकर दिल्ली तक भ्रष्टाचार व्याप्त है। आदिवासी क्षेत्र भी भ्रष्टाचार से अछूता नहीं रहा। आदिवासियों के लिए सरकार द्वारा क्रियान्वित योजनाएँ सिर्फ कागजों पर ही रहती है। वे उन तक पहुँच ही नहीं

Scanned with CamScanner

पाती। आदिवासियों के जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार की पोल खोलती हुई निर्मला पुतुल कहती हैं,-

"इन्दिरा - आवास के लिए बहुत दौड़-भाग की
पंचायत सेवक को मुर्गा भी दिया/
प्रधान को भी दिया पचास टका
घर अभी तक कुछ नहीं हुआ/पूरा डेढ़ साल हो गया।"(8)

आजादी के साठ साल बाद भी आदिवासी प्राथमिक जरूरतों के लिए संघर्षरत है। सरकार आदिवासियों को उनकी जमीन और जंगल से निष्कासित करने पर तुली हुई है। परिणामतः आदिवासी जंगल बचाने के लिए नक्सलवादी बनते जा रहे हैं। आजादी ने आदिवासियों से सिर्फ छिनने का ही काम किया है। इसलिए स्वतंत्रता उनके लिए मजाक बनकर रह गयी। आजादी की पोल खोलती हुई निर्मला पुतुल कहती हैं,-

"दिल्ली की गणतंत्र झाँकियों में
अपनी टोली के साथ नुमाइश बनकर कई- कई बार
पेश किये गये तुम/पर गणतन्त्र नाम की कोई चिड़िया
कभी आकर बैठी तुम्हारे घर की मुँडेर पर?"(9)

अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को बचाने लिए आदिवासियों को आजादी के पूर्व की तरह ही संघर्ष के लिए तैयार रहना चाहिए। जब तक आदिवासी संगठित नहीं होते तब तक उनका शोषण जारी रहेगा। शोषण-मुक्ति के लिए आदिवासियों को हाथ में शस्त्र उठाना ही पड़ेगा। शोषणमुक्ति के लिए क्रांति पर बल देती हुई निर्मला पुतुल कहती हैं,-

"इसलिए चुप नहीं रहूँगी अब /
उगलूँगी तुम्हारे विरुध्द आग
तुम मना करोगे जितना /
उतनी ही जोर से चीखूँगी मैं
x x x
आज की तारीख के साथ/
कि गिरेंगी जितनी बूँदें लहू की धरती पर
उतनी ही जनमेंगी निर्मला पुतुल /
हवा में मुट्ठी - बँधे हाथ लहराते हुए।"(10)

सारांश :-

निर्मला पुतुल हिन्दी की शीर्षस्थ रचनाकार है। आपके काव्य-संग्रह 'नगाड़े की तरह बजते शब्द' की कविताओं में संथाल परगना के आदिवासियों के समग्र जीवन की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति हुई है। जो हिन्दी साहित्य की एक महत्वपुर्ण उपलब्धि है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बजते शब्द, फ्लैप, प्रथम पृष्ठ
2. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बजते शब्द, पृ.44
3. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बजते शब्द, पृ.41-42
4. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बजते शब्द, पृ. 19
5. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बजते शब्द, पृ. 44
6. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बजते शब्द, पृ. 26
7. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बजते शब्द, पृ. 72
8. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बजते शब्द, पृ. 43
9. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बजते शब्द, पृ. 20
10. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बजते शब्द, पृ. 90-91

❑❑❑

Scanned with CamScanner